International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मुंशी प्रेमचंद का हिंदी साहित्य में योगदान

Ms. रीना

सहायक आचार्य, हिन्दी, महिला महाविद्यालय, झोझू कलाँ

सार

प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को एक विशिष्ट दिशा दी है। प्रेमचंद आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने अपने समय में थे, लेकिन किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ को देखते हुए उनकी महत्व और भी बढ़ जाती है। हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद एक अद्वितीय और प्रेरक लेखक रहे हैं जो किसान जीवन का यथार्थवादी चित्रण करते हैं। प्रेमचंद का कथा साहित्य आज भी बहुत उपयुक्त है। उनके कई उपन्यासों, जैसे सद्गति, कफन, पूस की रात और गोदान, गरीब श्रमिकों, किसानों और स्त्रियों का जीवंत चित्रण करते हैं। आज भी गाँवों में रंगभूमि, प्रेमाश्रम और गोदान के किसान देखे जा सकते हैं। प्रेमचंद का साहित्यिक क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। यह शोध पत्र प्रेमचंद के हिंदी साहित्य में योगदान पर प्रकाश डालने के लिए लिखा गया है।

प्रस्तावना

"धनपत राय श्रीवास्तव", प्रेमचंद के उपनाम से लिखने वाले, हिंदी और उर्दू में सर्वश्रेष्ठ भारतीय लेखकों में से एक हैं। उन्हें नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद भी कहते हैं। उपन्यास सम्राट के नाम से भी उनका नामकरण किया गया था। बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें इस नाम से पहली बार संबोधित किया था।

प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास की एक परंपरा की शुरुआत की, जो पूरी सदी के साहित्य को प्रभावित करती रही। हिन्दी साहित्य की उनकी विरासत के बिना हिन्दी साहित्य के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। वे एक संवेदनशील लेखक, सच्चे नागरिक, कुशल वक्ता तथा अनुग्रहपूर्ण संपादक थे। उनका योगदान बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में कोई तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं, अतुलनीय था।

1880 से 1936 तक, प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट थे। भारत के इतिहास में यह कालखण्ड बहुत महत्वपूर्ण है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता-संग्राम उन्नति की। वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था प्रेमचंद। वे संवेदनशील लेखक, जिम्मेदार संपादक, कुशल वक्ता और देशभक्त नागरिक थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में हिन्दी में इतना बड़ा काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई नहीं था। प्रकाशचन्द्र गुप्त ने 1984 में कहा कि प्रेमचंद ने भारतीय साहित्य को बनाया था. यह लेखन नई दिल्ली में साहित्य अकादमी में प्रकाशित हुआ था।)

31 जुलाई, 1880 को वाराणसी से लगभग चार मील दूर लमही नामक गाँव में प्रेमचंद का जन्म हुआ।

प्रेमचंद की माता आनन्दीदेवी और पिता मुंशी अजायब लाल थे। प्रेमचंद की बचपन की ज़िंदगी गाँव में बीती थी। वे अच्छे खिलाड़ी और नटखट बच्चे थे, जो खेतों से शाक-सब्जी और फल चुराने में माहिर थे। उन्हें मिठाई बहुत पसंद थी, विशेष रूप से गुड़। उन्होंने बचपन में लमही में पढ़ाई की और एक मौलवी साहब से उर्दू और फारसी पढ़ना सीखा। उन्होंने बचपन में एक रुपया चुरा लिया था। अपनी बचपन की यादों पर उनकी कहानी, "कजाकी" आधारित है। कजाकी डाक विभाग का हरकारा था और बहुत देर तक यात्रा करता था। बालक प्रेमचंद को हर समय कुछ सौगात लाता था। वह कहानी में बच्चे के लिए एक छोटे से हिरन लाता है, लेकिन डाकघर में देरी से पहुँचने पर उसे नौकरी से निकाला जाता है। हिरन के बच्चे के पीछे बहुत जल्दी डाकघर लौटा। कजाकी का व्यक्तित्व अविश्वसनीय रूप से मानवीय है। वह शालीनता और आत्मसम्मान का पुतला है, लेकिन उसका हृदय मानवीय करुणा से भरा है।

प्रेमचन्द की जीवनदृष्टि

प्रेमचंद की रचनाएँ उनकी कृति या रचना-व्यक्तित्व का प्रमाणिक सबूत हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि रचनाओं से बाहर के जीवन का उनके व्यक्तित्व से कोई संबंध नहीं है। वास्तव में, प्रेमचन्द की रचनाएं उनके जीवनकाल से अधिक स्पष्ट और गहरे हैं। उनकी रचनाएँ दो महायुद्धों के बीच भयंकर मानव-युद्ध का चित्रण करती हैं। ये रचनाएँ रचनाकाल के दृश्य संसार की संवेदनशील जीवन की सच्ची-झूठी गाथाएँ ही नहीं हैं, बल्कि प्रेमचन्द के व्यक्तित्व का परिचय भी हैं। उस बड़े सन्दर्भ में प्रेमचंद का व्यक्तिगत जीवन भी शामिल है। 'कलम का सिपाही' और 'कलम का जादूगर: प्रेमचन्द' उनके निजी जीवन के बारे में बताते हैं।

हम उनके पत्रों और उनके बारे में समकालीन लेखक-आलोचकों से जानकारी प्राप्त करते हैं। वे बताते हैं कि प्रेमचन्द ने लेखक से बाहर भी भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया था। वह आदमी है, इसलिए भागीदार है। एक आदमी होने के कारण प्रेमचन्द ने कलम के हथियार से लड़ाई में भाग लिया। उसने दूसरे क्षेत्रों में छोटे-छोटे पात्रों की हैसियत से भाग लिया, जो भारतीय जनमानस को उस शक्ति से परिचित कराया जो सामाजिक सन्दर्भों को बदलने में सक्षम है।

प्रेमचन्द की कृतियों में एक "अनुभव" था जो जीवन का "मानवीय" अनुभव भी था। लेकिन व्यक्तिगत जीवन के अनुभव से सार्वजनिक जीवन के अनुभव में अंतर है। स्वीकार नहीं किया जा सकता कि किसी रचनाकार का व्यक्तिगत जीवन ही उनकी रचनाओं में झलकता हो। भूमि-आसमान का अंतर बहुत से रचनाकारों के जीवन और काम का आधार है। यह भी कई बार पूरी तरह से उल्टा होता है। जबकि व्यक्तित्व की व्यापकता में ऐसी सीमा नहीं होती, निजी जीवन का अनुभव राग-द्वेष तक सीमित होता है। यह अजीब संयोग है कि प्रेमचन्द के व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों और उसके लेखन के अनुभवों में बहुत अंतर नहीं है। बल्कि यह अद्भुत समानता है कि उनकी कहानियों में प्रेमचन्द की ही प्रमुख घटनाएँ या उनके जीवनकाल की प्रमुख घटनाएँ मिल जाती हैं।

हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य हिन्दी भाषा में लिखित लेखों का समूह है। Hindi विश्व भर में सबसे अधिक बोली जाने

वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत में हैं। किंतु मध्ययुगीन भारत के ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और मारवाड़ी साहित्य में हिन्दी साहित्य की जड़ें हैं। हिन्दी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसकी शुरुआत कविता से हुई, जो ज्यादातर लोकभाषा के साथ बनाई गई थी। हिन्दी में तीन तरह का साहित्य है। चम्पू, गद्य और पद्य हिन्दी में पहली प्रामाणिक गद्य रचना कौन सी है, इस विषय में बहस होती है, लेकिन अधिकांश साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गये उपन्यास 'चंद्रकांता' को मानते हैं। साहित्य एक निरंतर बहती धारा है। उसमें कोई बाधा नहीं आती और उसमें कोई बाधा नहीं है। वह समय के साथ बदलता रहता है, और इसके साथ साहित्य भी बदलता रहता है। हिन्दी साहित्य का मानना है कि आठवीं शताब्दी में शुरू हुआ था। यह समय था जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में कई छोटे-छोटे शासन केंद्र बन गए जो एक दूसरे से लड़ते रहे।

इनकी मुसलमानों से भी लड़ाई होती रहती थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य का इतिहास अब तक लिखे गए इतिहासों में सबसे सही और व्यवस्थित माना जाता है। यह लेख आचार्य शुक्ल ने हिन्दी शब्द सागर की भूमिका नामक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1929 में प्रकाशित किया गया था। हिन्दी साहित्य में तीन प्रकार हैं:

चम्पू, गद्य और पद्य चम्पू गद्य और पद्य दोनों में होता है। हिन्दी में खड़ी बोली की पहली प्रामाणिक गद्य रचना कौन-सी है, इस विषय में विवाद है, लेकिन अधिकांश साहित्यकार लाला श्रीनिवास दास द्वारा लिखे गये उपन्यास परीक्षा गुरु को मानते हैं।

मुंशी प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन

प्रेमचंद बचपन से ही उर्दू उपन्यास और लघु कथाएँ लिखने में रुचि रखते थे, इसलिए उनका अपना अलग स्थान है। राजा और रानी की काल्पनिक कहानियों को लिखने की उनकी शैली शुरू में राजाओं और रानियों की कहानियों के रूप में थी, लेकिन जैसे-जैसे वे अपने आसपास होने वाली घटनाओं के प्रति अधिक जागरूक होते गए, उन्होंने सामाजिक समस्याओं पर लिखना शुरू किया, और उनके उपन्यासों ने लोगों को सामाजिक चेतना और जिम्मेदारी की भावना जगाने का काम किया उन्होंने बहुत ही स्पष्ट रूप से जीवन की वास्तविकताओं और एक शांत समाज में आम आदमी द्वारा सामना की जाने वाली कई समस्याओं पर लिखा।

उनका मुख्य ध्यान ग्रामीण भारत पर था और जमींदारों, कर्जदारों और अन्य लोगों के हाथों एक साधारण गरीब ग्रामीण के शोषण पर था। वे भी हिंदुओं और मुसलमानों की एकता पर जोर देते थे। गोदान, गबन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। उनकी लोकप्रिय लघु कथाओं में आत्माराम, उधार की घड़ी, बड़े घर की बेटी आदि नाम हैं। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता सत्यजीत रे ने उनके कुछ काम को फिल्मों में भी दिखाया था।

प्रेमचंद केवल एक मनोरंजक लेखक ही नहीं थे; वे हिन्दू और उर्दू दोनों भाषाओं में भी अच्छे थे। उर्दू भाषा पर उनकी अच्छी समझ ने उन्हें एक उत्कृष्ट पत्रकार का सम्मान दिलाया। एक पत्रकार के रूप में, वे उस समय भारत में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन से बहुत प्रभावित थे। लेखन में उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय भाग लेने की इच्छा व्यक्त की। उस समय की देशभक्ति से प्रभावित होकर, उन्होंने सोज़-ए-वतन नामक लघु कथाओं की एक पुस्तक लिखी। प्रेमचंद के इस

काम को साहसी और विद्रोही माना जाता था। यह पुस्तक बहुत से भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती थी। इससे ब्रिटिश सरकार ने कठोर प्रतिक्रिया दी। सरकार ने सोज़-ए-वतन पर कब्जा कर लिया और सभी प्रतियों को जला दिया।

यथार्थवाद, जिसे उस समय हिन्दी साहित्य में क्रांतिकारी विकास माना जाता था, प्रेमचंद ने लाया; उनका अधिकांश साहित्य काल्पनिक कहानियों या धार्मिक और पौराणिक कहानियों पर आधारित था। वे समाज को सुधारने और दूरदर्शी थे। उनकी कहानियों में वास्तविक घटनाओं और परिस्थितियों का बहुत प्रयोग हुआ। वास्तविक समस्याओं से गुजरने वाले सभी पात्र थे। वे उस समय भारत में मौजूद सामाजिक बुराइयों पर लिखते थे। इन सामाजिक बुराइयों में दहेज, गरीबी, उपनिवेशवाद, भ्रष्टाचार और जमींदारी शामिल हैं।

मुंशी प्रेमचंद की प्रमुख कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यास
1. दुनिया का सबसे अनमोल रत्न	रंगभूमि (1925)
2. सप्त सरोज	निर्मला (1927)
3. प्रेम-द्वादशी	गबन (1931)
4. समरयात्रा	कर्मभूमि (1932)
5. मानसरोवर : भाग एक व दो	गोदान (1936)
6. कफन	हमखुर्मी व हमसवाब
7. नवनिधि	सेवासदन (1918)
8. प्रेमपूर्णिमा	बाज़ारे-हुस्न (उर्दू)
9. प्रेम–पच्चीसी	प्रेमाश्रम (1921)
10. प्रेम–प्रतिमा	मंगलसूत्र प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है।

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य की विशेषताएँ

विभिन्न साहित्यिक रूपों में प्रेमचंद की रचना-दृष्टि व्यक्त हुई। वह एक बहुआयामी लेखक थे। प्रेमचंद की रचनाओं में उस समय का इतिहास है। उनकी रचनाओं में आम लोगों की भावनाओं, परिस्थितियों और समस्याओं को मार्मिक रूप से चित्रित किया गया था। उनकी रचनाएँ भारत में सबसे व्यापक और व्यापक वर्ग की हैं। प्रेमचंद की कहानियां मानव-स्वभाव की मूल महत्ता पर बल देती हैं। Annette, "बड़े घर की बेटी", अपने देवर से अपमानित हो गई, क्योंकि वह उससे कर्कशता से बोलता था और उस पर खीझकर खड़ाऊँ फेंकता था। वह अपने देवर को क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है जब वह देखती है कि उनका परिवार टूट रहा है। यही कारण है कि "नमक का दरोगा" बहुत ईमानदार व्यक्ति है। सब लोग घूस देकर उसे बदनाम करने में असमर्थ हैं। सख्ती से उचित कार्यवाही करने के कारण सरकार उसे नौकरी से बर्खास्त कर देती है, लेकिन उसने जिस सेठ की घूस से इनकार किया था, उसे उसी स्थान पर एक ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाता है। वह ईमानदार और जिम्मेदार कर्मचारी चाहता था।

इस प्रकार प्रेमचंद की दुनिया में सत्य का फल मजबूत होता है। ऐसी आदर्शवादी घटनाएँ वास्तविक जीवन में बहुत कम होती हैं। साथ ही, गाँव का पंच व्यक्तिगत शत्रुता और शिकायतों को त्यागकर निष्पक्ष न्याय प्रदान करता है। उसके आत्मा उसे इसी दिशा में ढेलती है। यह भी लगता है कि ऐसा न्याय-धर्म अंधविश्वास, पूर्वग्रह, अंधविश्वास, जाति-पांत के झगड़े और धर्मों से जर्जर ग्राम-समाज में संभव है। प्रेमचंद की कहानियों का बंबई का सुप्रसिद्ध प्रकाशन गृह, हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर, प्रकाशित हुआ। 'राजा हरदोल' और 'रानी सारन्धा' जैसी बुंदेल वीरता की प्रसिद्ध कहानियाँ इस संग्रह का शीर्षक था।

हिन्दी उपन्यास परम्परा में मुंशी प्रेमचंद का योगदान

अंग्रेजी उपन्यासों ने हिन्दी में उपन्यास साहित्य को जन्म दिया। इसका विकास भारतेन्दु युग से होता है, जैसा कि आधुनिक हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं का भी है। पर इस विधा का पूर्ण परिपाक प्रेमचंद की रचनाओं में मिलता है। हिन्दी उपन्यास ने प्रेमचंद के बाद बहुत कुछ लिखा है और आज भी गद्य की सबसे लोकप्रिय शैली के रूप में जाना जाता है। भारतेन्दु युग में हिन्दी-उपन्यास बंगला उपन्यासों के अनुवाद से शुरू हुआ। भारतेन्दु का उपन्यास 'पूर्णप्रकाश' और 'चंद्रप्रभा' केवल अनुवाद हैं। लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षा-गुरु' हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है, लेकिन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल श्रद्धाराम फुलौरी का 'भाग्यवती' हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है। ये दोनों उपन्यास सामाजिक विषयों पर हैं। भारतेन्दु की पूरी कृति, "आखिरी-जमाती", इसके बाद मौलिक उपन्यास माना जाता है। भारतेन्दु काल के महान लेखकों में जगमोहन सिंह (श्यामा स्वप्न), बालकृष्ण भट्ट (नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान), देवी प्रसाद उपाध्याय (सुन्दर सरोजिनी), राधाकृष्ण दास (निःसहाय हिन्दू), किशोरीलाल गोस्वामी (लवंगलता, कुसुम कुमारी), बालमुकुंद गुप्त (कामिनी) आदि शामिल हैं।

उस युग में कुछ ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे गए, लेकिन इनमें इतिहास कम और अधिक ऐयारी है। इस दृष्टि से ब्रजनन्दन सहाय की पुस्तकें 'लालचीन' और मिश्रबन्धु की पुस्तकें 'वीरमणि' महत्वपूर्ण हैं। 'लालचीन' गयासुद्दीन बलवन के एक गुलाम की कहानी है, जबकि 'वीरमणि' अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर की गई चढ़ाई का चित्रण है। इस युग में मौलिक उपन्यासों की तुलना में अनूदित उपन्यासों की बहुतायत थी। भारतेन्दु युग से द्विवेदी युग तक मौलिक और अनूदित उपन्यासों की यह परंपरा चली गई। इन उपन्यासों के बाद हिन्दी में तिलिस्मी और जासूसी उपन्यासों का बड़ा प्रसार हुआ। देवकीनन्दन खत्री ने जासूसी और ऐयारी से भरे उपन्यास लिखे जैसे 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांतासंतति' और 'भूतनाथ' (अपूर्ण)। हिन्दी में इन अद्भुत उपन्यासों को पढ़ने के लिए बहुत से लोगों ने रुचि दिखाई। देवकीनन्दन खत्री के पुत्र दुर्गाप्रसाद ने अपने पिता की कृतियाँ लिखीं, जैसे 'रुक्मिणी', 'लालपंजा', 'प्रतिशोध' और 'सफेद शैतान'। इस तरह के उपन्यास गोपालराम गहमरी, देवी प्रसाद शर्मा, जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी और किशोरीलाल गोस्वामी ने लिखे। हरिश्चंद्र और लज्जाराम मेहता को प्रेमचंद और जासूसी उपन्यासों की कड़ी मान सकते

हैं। हरिश्चंद्र के "ठेठ हिन्दी का ठाठ" और "अधखिला फूल" उपन्यासों, साथ ही मेहता के "आदर्श हिन्दू" और "हिन्दू गृहस्थ" उपन्यासों को याद किया जाना चाहिए।

संक्षेप में, प्रेमचंद-पूर्व के उपन्यासों में विषयवस्तु, तत्व और भाषा की विविधता थी। सामाजिक उपदेशों या मनोरंजन के उद्देश्य से अधिकांश उपन्यास लिखे गए। सभी उपन्यासों में कथोपकथन शैली का अभाव है और अधिकांश वर्णनात्मकता है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद को निश्चित रूप से 'मनुष्यता' का सर्वश्रेष्ठ लेखक माना जाता है। जब तक समाज में अनैति, अन्याय, अत्याचार और अविचार है, इनकी कृतियाँ मशाल का काम करती रहेंगी और जब मनुष्यता का चेहरा मुक्ति के प्रकाश से उज्ज्वल होगा, तब वे शोषित और पीड़ित जनता की जीवन गाथा से हमारा परिचय कराती रहेंगी. उनके जीवन व्यापी संघर्ष। प्रेमचंद की जीवनशैली तपस्वियों की तरह थी। उनका जीवन साहित्यसेवा के लिए समर्पित था। उन्होंने जीवन भर साहित्य लिखते रहे। वे एक सफल और सच्चे उपन्यासकार हैं। उनके लेखन या उपन्यास इसे सिद्ध करते हैं।

प्रेमचंद का साहित्य चतुर्दिक व्याप्त समाज में हुआ है और उसमें शामिल लोगों से प्रेरित है। प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक जीवन बहुत से संबंधों, कठिन प्रश्नों और समस्याओं, आशा-आकांक्षाओं के साथ दिखाई देता है, इसलिए उनके पात्र मुख्यतः सामाजिक या वर्गीय हैं। लेखक इन पात्रों की विशेषताओं को अच्छी तरह उभारता है, उनसे उनका व्यक्तित्व बनाता है और परिस्थितियों के प्रभाव में प्रत्येक पात्र की मानसिक स्थिति का विश्लेषण करता है। लेखन ने उन पात्रों के सामाजिक रूप और उनकी सामाजिकता से जुड़े मानसिक स्तरों को खोला है।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद, समालोचक, पृष्ठ 25 (1925)
2. यादव चित्रा (2019), मुंशी प्रेमचंद का हिन्दी साहित्य में योगदान—एक समीक्षा, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूम: 16, अंक: 5 डीओआई: 10.29070/जोजसआरआई
3. देवी, बाला (2018), हिन्दी उपन्यास और भारतीय समाज का मध्यवर्ग, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंड:14, अंक: 2, डीओआई: 10.29070/जोजसआरआई
4. प्रो. चन्दवशी डी.पी. (2015), "हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान" रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज।
5. गुरचरण सिंह (2007), द न्यू मिडिल क्लास इन इंडिया: ए बायोग्राफिकल एनालिसिस, रावत पब्लिकेशन, पृ. 19, जयपुर
6. लाल बहादुर वर्मा (1998), यूरोप का इतिहास, खंड–1, प्रकाशन संस्थान।
7. दास श्यामसुंदर (1982), भारतीय मध्यवर्ग, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 58
8. संजय जोशी, फ्रेक्चर्ड मॉडर्निटी, ओ यू पी, 2001, पृ. 5